

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 26, रहस्योद्घाटन 20, शैतान का बंधन और सहस्राब्दी का परिचय

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन 20, शैतान का बंधन और सहस्राब्दी का परिचय पर सत्र 26 है।

प्रकाशितवाक्य 20 में संभवतः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सबसे प्रसिद्ध विशेषता शामिल है। यदि आप किसी से पूछते हैं कि वे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को किससे जोड़ते हैं, तो वे अपने मन में प्रकाशितवाक्य 20 की ओर मुड़ेंगे और सहस्राब्दी पाठ, हजार-वर्षीय शासनकाल के अध्याय 20 में चित्र के बारे में सोचेंगे। तो मैं जो करना चाहता हूँ वह अध्याय 20 के बारे में थोड़ी बात करना है और न केवल सहस्राब्दी के विचार पर ध्यान केंद्रित करना है बल्कि अध्याय को समग्र रूप से देखना है कि यह रहस्योद्घाटन के भीतर कैसे कार्य करता है। लेकिन हम मिलेनियम के बारे में थोड़ी बात करेंगे और इसे समझने का एक तरीका, मुझे लगता है, यह किताब के बाकी हिस्सों और यह कैसे काम करता है, के अनुरूप है।

इस खंड को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक, मुझे लगता है, अध्याय 20 से शुरू करते हुए, हमने देखा कि अध्याय 19 और श्लोक 11 पुस्तक में एक नया खंड शुरू करते हैं, एक खंड जो 1911 से लेकर अध्याय 21 तक फैला हुआ है। श्लोक 8. हमने 19 के पहले कुछ छंदों में अध्याय 17 और 18 कहा, और फिर अध्याय 21:9 से 22:5 तक दो युग्मित खंड हैं जो वेश्या बेबीलोन और न्यू जेरूसलम रोम की तुलना और विशेष रूप से विरोधाभास करते हैं। फिर, बीच में यह खंड 19 श्लोक 11 से 21 श्लोक 8 तक शामिल है जो मसीह के दूसरे आगमन के अर्थ को चित्रित करने और व्याख्या करने के लिए विभिन्न छवियों का उपयोग करता है। इसलिए, अध्याय 19 और श्लोक 11 के साथ, मुझे लगता है कि हम इतिहास के बिल्कुल अंत में हैं।

हम मसीह के दूसरे आगमन पर हैं, और वह पूरा खंड विभिन्न दृश्यों को चित्रित करता है जो वर्णन करता है कि जब मसीह अपने दूसरे आगमन पर पृथ्वी पर लौटेगा तो क्या होगा। तो फिर, जो महत्वपूर्ण है, वह यह है कि अध्याय 20 को घटनाओं की इस व्यापक श्रृंखला के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। मुझे लगता है कि अध्याय 20 में हम जो देखेंगे, साथ ही अध्याय 19 और 11 से लेकर अध्याय 20 के अंत तक, शायद एक बार फिर घटनाओं या दृश्यों की एक श्रृंखला को व्यक्त करेंगे जो मोटे तौर पर उसी घटना का वर्णन करते हैं।

अर्थात्, 19 से 20 तक को आवश्यक रूप से घटनाओं की एक श्रृंखला के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए जो कालानुक्रमिक क्रम में घटित होंगी। लेकिन याद रखें, जॉन अपने दर्शन की प्रस्तावना इस प्रकार करेंगे, फिर मैंने देखा, और फिर मैंने देखा। यह मुख्य रूप से दूरदर्शी अनुक्रम को इंगित करता है, जिस क्रम में उसने इसे देखा, जरूरी नहीं कि वह क्रम जिसमें चीजें घटित होंगी।

इसलिए अध्याय 20, अध्याय 20 में घटनाओं को सख्त कालानुक्रमिक क्रम में घटित होने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि विभिन्न दृष्टिकोणों या यीशु मसीह के वापस आने पर क्या होता है, इसे देखने के विभिन्न तरीकों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। जब मसीह इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना को पूर्ण करने के लिए वापस आता है तो क्या घटित होता है इसका अर्थ और महत्व। अध्याय 19, साथ ही छंद 11 से 21 में, हम देखते हैं कि मसीह एक युद्ध के रूप में लौटता है जो संभवतः अंतिम न्याय का प्रतीक है जहां पृथ्वी के सभी लोगों का न्याय किया जाता है, जिसमें दो जानवर, जानवर और झूठा भविष्यवक्ता शामिल हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय 13 से। अब, अध्याय 20 में, हम पाते हैं कि अगले अध्याय 20 में मुख्य रूप से निर्णय दृश्यों की एक और श्रृंखला है।

तो, अध्याय 20, मेरी राय में, अध्याय 20 का मुख्य विषय अभी भी निर्णय में से एक है। अध्याय 20 में, अब हम देखेंगे कि शैतान का भी न्याय किया जाएगा और उसे पदच्युत कर दिया जाएगा, बिल्कुल जानवर की तरह। इसलिए एक महत्वपूर्ण विशेषता जो हमने पहले ही सुझाई है, दिलचस्प बात यह है कि, अध्याय 19 और 20, दो जानवरों और ड्रैगन का उसी पद्य क्रम में मूल्यांकन या हटा दें, जैसा कि उन्हें अध्याय 12 और 13 में पेश किया गया था।

अध्याय 20 तीन अलग-अलग दृश्यों को जोड़ता है, वे सभी विभाजित हैं। मैंने देखा कि पहला दृश्य पहले तीन छंदों में पाया जाता है, और वे सभी जुड़े हुए हैं, लेकिन पहला दृश्य पहले तीन छंदों में पाया जाता है। और वह है शैतान को एक हजार वर्ष के लिये अथाह कुण्ड में बाँधना। दूसरा दृश्य अध्याय 20, छंद चार और 10 में है, और वह शहीद हुए संतों का पुनरुत्थान और उनके हजार साल के शासनकाल के बाद शैतान के साथ अंतिम लड़ाई है।

शैतान को रिहा कर दिया गया और अंतिम युद्ध छेड़ दिया गया। और फिर अध्याय 20 में तीसरा और अंतिम दृश्य श्लोक 11 से 15 में है, और वह महान श्वेत सिंहासन का न्याय है। पहले दो दृश्य हजार साल की अवधि के उल्लेख से एक साथ बंधे हैं जिस पर हम नज़र डालेंगे।

और, ओह, अध्याय 20 में इन तीन दृश्यों में से प्रत्येक की जांच करने से पहले मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ, अध्याय 20, और श्लोक एक से शुरू करना। और मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास अथाह कुण्ड की कुंजी और हाथ में एक बड़ी जंजीर थी। उसने अजगर, उस प्राचीन साँप, जो शैतान या शैतान है, को पकड़ लिया, और उसे एक हजार साल के लिए बाँध दिया।

उसने उसे अथाह कुण्ड में फेंक दिया और उस पर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हजार वर्ष के अंत तक राष्ट्रों को धोखा न दे सके। और उसके बाद उसे थोड़े समय के लिए मुक्त कर देना चाहिए। मैं ने सिंहासन देखे जिन पर न्याय करने का अधिकार दिया गया लोग बैठे हुए थे।

और मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनका यीशु के लिए गवाही देने के कारण सिर काट दिया गया था। और परमेश्वर के वचन के कारण उन्होंने उस पशु या उसकी मूरत की पूजा नहीं की थी, और न उसकी छाप अपने माथे या हाथों पर ली थी। वे जीवित हो गये, और उन्होंने मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य किया।

जब तक हज़ार वर्ष पूरे नहीं हुए तब तक शेष मृतक जीवित नहीं हुए। यह पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र वे हैं जिन्होंने पहले पुनरुत्थान में भाग लिया है।

दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ एक हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे। जब हज़ार वर्ष पूरे हो जाएँगे, तो शैतान अपनी कैद से रिहा हो जाएगा और पृथ्वी के चारों कोनों में राष्ट्रों, गोग और मागोग को धोखा देने और उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करने के लिए निकल जाएगा। संख्या में वे समुद्र के किनारे की रेत के समान हैं।

उन्होंने पृथ्वी भर में मार्च किया और परमेश्वर के लोगों के शिविर को, उस शहर को, जिसे वह प्यार करता है, घेर लिया। परन्तु आग स्वर्ग से उतरी और उन्हें भस्म कर डाला। और उन्हें धोखा देने वाले शैतान को जलती हुई गन्धक की झील में, जहां वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता डाला गया था, फेंक दिया गया।

वे दिन-रात युगानुयुग यातना सहते रहेंगे। फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस पर जो बैठा हुआ था, उसे देखा। पृथ्वी और आकाश उसकी उपस्थिति से भाग गए और उनके लिए कोई जगह नहीं रही।

और मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुआओं को सिंहासन के साम्हने खड़े देखा, और पुस्तकें खोली गईं। फिर, एक और पुस्तक, जीवन की पुस्तक, खोली गई। जैसा कि किताबों में दर्ज है, मृतकों का न्याय उनके कार्यों के अनुसार किया गया।

समुद्र ने उन मरे हुआओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुआओं को जो उन में थे दे दिया। और प्रत्येक व्यक्ति का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया। फिर, मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया।

आग की झील दूसरी मौत है। यदि किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा न पाया गया, तो उसे आग की झील में फेंक दिया गया। तो मैं जो करना चाहता हूँ वह उन तीन खंडों में से प्रत्येक को देखना है।

पहला श्लोक एक से तीन तक है, जिसमें शैतान को एक हज़ार साल की अवधि के लिए बाँधकर खाई में फेंके जाने का दृश्य है, जिसके बाद उसे थोड़े समय के लिए रिहा कर दिया जाएगा। अब फिर से याद करें, दो जानवरों का पहले ही न्याय किया जा चुका है और उन्हें आग की झील में डाल दिया गया है, जानवर और झूठा भविष्यद्वक्ता। अब शैतान को पेश किया गया है, और उसका न्याय पेश किया गया है लेकिन दो चरणों में।

पृष्ठभूमि का एक हिस्सा अध्याय 12 से ड्रैगन है। आपने शायद अध्याय 12 और 13 से कुछ कनेक्शनों पर ध्यान दिया है। ड्रैगन का उल्लेख, जो बिल्कुल वैसा ही है जैसा अध्याय 12, छंद नौ में वर्णित किया गया था, को प्राचीन कहा जाता है साँप, जो शैतान या शैतान है।

तो अब अध्याय 12 से वही ड्रैगन यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है। फिर से, ड्रैगन की आकृति अराजकता और बुराई का प्रतीक है और उदाहरण के लिए, पुराने नियम के पुराने ग्रंथों के समुद्री राक्षसों से मिलती जुलती है या उन पर आधारित है। अब, शैतान की मृत्यु का परिचय दिया गया है, लेकिन दो अलग-अलग चरणों में।

तो यह दिलचस्प है: शैतान को यूनानी आग की झील में नहीं फेंक दिया जाता। उनका फैसला दो अलग-अलग चरणों में पेश किया जाता है। सबसे पहले, उसे गड्ढे, रसातल में बांध दिया जाता है, और फिर दूसरे, उसे छोड़ दिया जाता है और अंत में अध्याय 20 के अंत में आग की झील में फेंक दिया जाता है।

अब हमारा परिचय रसातल से हो चुका है। हमने देखा है कि प्रकाशितवाक्य में रसातल या गड्ढे ने राक्षसों के घर, राक्षसी प्राणियों के घर, राक्षसी प्राणियों की जेल को इंगित करने में भूमिका निभाई है। तो, अध्याय नौ में टिड्डियाँ इसमें से निकलती हैं, और टिड्डियाँ स्पष्ट रूप से राक्षसी आकृतियों से पहचानी जाती हैं।

अध्याय 11 में जानवर रसातल से बाहर आता है, और अब शैतान को रसातल में फेंक दिया जाता है और बंद कर दिया जाता है। इसलिए शैतान को रसातल में, राक्षसी प्राणियों के जेलखाने में लौटा दिया गया है। अब, पाठ की शुरुआत एक देवदूत द्वारा जंजीर के साथ नीचे आने से होती है, जो ड्रैगन को पकड़ने और उसे बांधने के लिए तैयार है।

और फिर, यह दिलचस्प है कि ईश्वर ऐसा नहीं करता है, या यीशु भी ऐसा नहीं करता है, लेकिन ऐसा करने के लिए एक देवदूत की आवश्यकता होती है। फिर, इससे पता चलता है कि पुस्तक में कोई द्वैतवाद नहीं है, लेकिन ईश्वर को संप्रभु के रूप में चित्रित किया गया है, और इसलिए उसके देवदूत प्राणी इस तरह की चीजें कर सकते हैं, यहां तक कि शैतान को भी बांध सकते हैं। यह संभव है कि अध्याय नौ, श्लोक एक में यह वही देवदूत है, जो टिड्डियों को बाहर निकालने के लिए रसातल की कुंजी के साथ नीचे आया था।

लेकिन मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है: न केवल शैतान को रसातल में बंद करने का विचार, बल्कि उसे वापस बाहर आने देने का भी, ताकि वह आग की झील में, अंतिम न्याय में चला जाए। मुझे लगता है कि शैतान का यह दो-स्तरीय या दो-चरणीय निर्णय, पुराने नियम और सर्वनाशी साहित्य से राक्षसी दुष्ट प्राणियों का न्याय कैसे किया जाता है, इसकी एक सामान्य अवधारणा को प्रतिबिंबित करता प्रतीत होता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप यशायाह अध्याय 24 और छंद 21 और 22 पर वापस जाते हैं, तो एक खंड जो यशायाह के खंड 24 से 26 तक से संबंधित है, उसे अक्सर छोटे सर्वनाश का लेबल दिया जाता है।

परन्तु 21 और 22 में, उस दिन, यहोवा ऊपर स्वर्ग में शक्तियों को और नीचे पृथ्वी पर राजाओं को दण्ड देगा। उन्हें कैदियों की तरह एक साथ इकट्ठा किया जाएगा, कालकोठरी में बांध दिया जाएगा। वे बन्दीगृह में बन्द कर दिये जायेंगे और बहुत दिनों के बाद दण्ड पायेंगे।

तो, उस दोतरफा पर ध्यान दें। पहले, उन्हें जेल में बाँध दिया जाएगा, जेल में बंद कर दिया जाएगा, और फिर कुछ समय बाद, उनका न्याय किया जाएगा। आपको कुछ सर्वनाशकारी पाठों में ऐसी ही भाषा मिलती है।

उदाहरण के लिए, 1 हनोक अध्याय 10 और श्लोक 4 से 6 तक। 1 हनोक 10, और यह श्लोक 4 है, और दूसरी बात, प्रभु ने राफेल से कहा, जो एक स्वर्गदूत है, अज़ाजेल को हाथ और पैर बांधो और उसे अंधेरे में फेंक दो। . और इसलिये उस ने दुदाएल के जंगल में एक गड्ढा बनाकर उसे वहां डाल दिया। उसने उसके ऊपर एक ऊबड़-खाबड़ और नुकीली चट्टान फेंकी, और उसका चेहरा ढँक दिया ताकि वह प्रकाश न देख सके और न्याय के महान दिन पर उसे आग में भेज दिया जा सके।

तो, इस अज़ाजेल पर फिर से ध्यान दें, जो कि कोई प्रमुख राक्षसी नेता हो सकता है, या शायद स्वयं शैतान भी, न्याय के दिन तक चट्टानों से ढके एक गड्ढे में फेंक दिया गया हो। आपको एक अन्य सर्वनाश पाठ, 2 हनोक में एक समान दृश्य मिलता है, और अध्याय 7 में, हम पढ़ते हैं, और वहां, यह छंद 1 और 2 है, और वहां, मैं देखता हूँ कि कैदी सुरक्षा के अधीन हैं, लटक रहे हैं, असीमित न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन स्वर्गदूतों का स्वरूप स्वयं अंधकार जैसा है।

तो, अब आपके पास जेल में बंद देवदूत प्राणियों की एक और तस्वीर है, जो न्याय के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए, यह उनका अंतिम निर्णय नहीं है। वे फैसले के समय तक बंद हैं।

आप 2 पतरस अध्याय 2 और पद 4 भी पढ़ सकते हैं। 2 पतरस अध्याय 2 और पद 4 में, मुझे लगता है कि हम पतरस को उसी कल्पना और उसी कहानी पर आकर्षक और भरोसा करते हुए पाते हैं। शायद 1 पतरस 3, साथ ही उस हिस्से की जेल में बंद आत्माएँ भी। लेकिन पद 2 में 2 पतरस, मुझे खेद है, अध्याय 2 और पद 4, क्योंकि यदि परमेश्वर ने पाप करने पर स्वर्गदूतों को नहीं छोड़ा, बल्कि उसने उन्हें नरक में भेज दिया, और उन्हें न्याय के लिए होने वाले निराशाजनक निर्णयों में डाल दिया।

तो, न्याय के दिन की प्रतीक्षा में जेल में बंद राक्षसी स्वर्गदूतों के इस विषय पर फिर से ध्यान दें। और विचार यह है कि उन्हें अपना फैसला सुनाने के लिए जेल से बाहर जाने दिया जाएगा। मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि यह अध्याय 17 में जानवर के वर्णन के पीछे हो सकता है, जहां उसका वर्णन इस प्रकार किया गया था कि वह कौन था, कौन नहीं है, और कौन आ रहा है, लेकिन वह निर्णय में चला जाता है।

लेकिन यहाँ, मुझे लगता है, मुझे लगता है कि लेखक पुराने नियम से, सर्वनाशी साहित्य से उस छवि को चित्रित कर रहा है, वही छवि जो आप पाते हैं, उदाहरण के लिए, 2 पतरस 2:4 में, और शायद यहूदा 6 में भी, जो अब जॉन इसमें स्वयं शैतान के अंतिम निर्णय को दर्शाया गया है, आदर्श, दुष्ट, राक्षसी प्राणी, जो स्वयं शैतान है। अब उनका भी दो चरणों में मूल्यांकन होता है. सबसे पहले उसे जेल में बंद करना.

दूसरा, उसे निर्णय लेने के लिए बाहर जाने देना। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह इस बात का मॉडल प्रदान करता है कि जॉन यहां शैतान के फैसले को दो चरणों में क्यों चित्रित करता है। यीशु शैतान को बाँधने की भी बात करते हैं।

उदाहरण के लिए, मैथ्यू 12:29 में, वह ताकतवर आदमी को बांधने की बात करता है। परमेश्वर का राज्य नहीं आ सकता, केवल तभी आ सकता है जब कोई ताकतवर आदमी, जो स्वयं शैतान है, को बांधने के लिए आये। ल्यूक अध्याय 10, श्लोक 18, यीशु के यह कहने के बारे में बात करता है, मैंने शैतान को बिजली की तरह गिरते देखा।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह वह कल्पना है जिसे जॉन ने चित्रित किया है या जॉन यीशु की शिक्षा को प्रतिबिंबित कर रहा है। यह निश्चित रूप से संभव है, लेकिन शायद हमें यह देखना चाहिए कि यीशु की अपनी शिक्षा, उद्घाटन और परमेश्वर के राज्य का आगमन प्रारंभिक बंधन थे। और अब हम शैतान के अंतिम बंधन और अंतिम न्याय को देखते हैं जो मसीह के दूसरे आगमन पर होता है।

फिर, मुझे लगता है कि यह समझना एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि 19, श्लोक 11 से लेकर अध्याय 21 तक, हमें घटनाओं की एक श्रृंखला मिलती है जो मुझे लगता है कि ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर घटित होती है। तो, शैतान का बंधन, जब यीशु के राज्य ने पहली बार आगमन पर भगवान के राज्य को पृथ्वी पर लाया था, एक प्रारंभिक बंधन था जो अब मसीह के दूसरे आगमन पर शैतान के अंतिम बंधन में अपनी परिणति पाता है। दूसरे शब्दों में, जैसा कि ग्रांट ओसबोर्न अपनी टिप्पणी में कहते हैं, शैतान पूरी तरह से रसातल में बंधा हुआ है, और वह बच नहीं सकता।

और उसके रसातल में बंधने का कारण यह है कि वह अब राष्ट्रों को धोखा देने में सक्षम नहीं है। उत्पत्ति 3 से शुरू होकर यह उसकी प्राथमिक भूमिका थी, जहाँ वह आदम और हव्वा को धोखा देता है। अध्याय 12 और श्लोक 9 में, उसे राष्ट्रों को धोखा देने वाला बताया गया है।

और एक बार फिर, अध्याय 20 और अध्याय 12 के बीच संबंध पर ध्यान दें। और हम बाद में कुछ अन्य कनेक्शन देखेंगे। इसलिए, शैतान अब राष्ट्रों को धोखा देने में सक्षम नहीं है।

और हम पूछेंगे कि ऐसा क्यों हो सकता है, लेकिन जब वह अंततः रिहा हो जाता है, तो वह राष्ट्रों को एक बार फिर अपनी धोखा देने वाली शक्ति के प्रति ग्रहणशील पाता है और बाद में अध्याय 20 में भगवान के लोगों पर अंतिम हमला या हमला करता है। इस बिंदु पर, इन हजार वर्षों तक, वह राष्ट्रों को धोखा देने में सक्षम नहीं है। हालाँकि इस बिंदु पर यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि उसे राष्ट्रों को धोखा देने की अनुमति क्यों नहीं है, कम से कम मुझे नहीं लगता।

तो अब जब शैतान को बांध दिया गया है, और फिर से, मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूँ वह यह है कि मुझे लगता है कि अध्याय 20 का मुख्य विषय अभी भी शैतान के बंधन, बंधन और अंतिम निर्णय में से एक है। और यह अंतिम न्याय के दृश्य के साथ समाप्त होता है, लेकिन शैतान का बंधन और न्याय अध्याय 20 में प्राथमिक बिंदु प्रतीत होता है। अब जबकि शैतान एक हजार

वर्षों के लिए बंधा हुआ है, अगले कुछ छंद, विशेष रूप से छंद चार से छह, हमें बताओ कि उन हजार वर्षों के दौरान क्या हुआ।

वास्तव में, आप श्लोक चार से छह को हटा सकते हैं, और एक से तीन श्लोक स्वाभाविक रूप से सात से दस में प्रवाहित होंगे। सात की शुरुआत तब होती है जब हजार साल पूरे हो जाते हैं; शैतान को उसकी कैद से रिहा कर दिया जाएगा। फिर से, मैं उन सर्वनाशकारी ग्रंथों और पुराने नियम की पृष्ठभूमि को प्रतिबिंबित करने के बारे में सोचता हूँ कि कैसे राक्षसों से निपटा जाता है और उनका न्याय किया जाता है।

लेकिन छंद चार से छह एक तरह से, एक सम्मिलन है, कोई विषयांतर नहीं, लेकिन शैतान के इस दो-चरण बंधन और न्याय के बीच में, आप छंद चार से छः पाते हैं जो वर्णन करता है कि उस हजार साल की अवधि के दौरान क्या होता है . और वह यह है कि, संत जीवन में आते हैं, और उनका पुनरुत्थान होता है, और अब वे एक हजार वर्षों तक मसीह के साथ शासन करते हैं। जब तक एक हजार वर्ष की वह अवधि पूरी नहीं हो जाती, तब तक शैतान को फिर से छोड़ दिया जाता है।

लेकिन मैं जो करना चाहता हूँ वह इस पाठ को फिर से उस दृष्टिकोण से देखना है जिस तरह से इसे अक्सर चर्च के इतिहास में देखा गया है, लेकिन मैं इस पर नजर रखना चाहता हूँ कि यह वास्तव में कैसे कार्य कर रहा है, मुझे लगता है, इस पाठ में, व्यापक संदर्भ, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में। पाठ श्लोक चार में सिंहासनों की दृष्टि से शुरू होता है, जिसे सिंहासन स्पष्ट रूप से याद करते हैं, जैसा कि पूरी किताब में इस्तेमाल किया गया है, अध्याय चार और पांच में, स्पष्ट रूप से राजत्व, अधिकार और संप्रभुता की धारणा को याद करते हैं। तो अब लेखक सिंहासन, बहुवचन देखता है, लेकिन वह हमें यह नहीं बताता कि कितने सिंहासन हैं।

कुछ लोगों ने अनुमान लगाया है कि यह बुजुर्गों के 24 सिंहासन हैं, लेकिन अध्याय चार और पांच से मुझे नहीं लगता कि यह संभव है। परन्तु यूहन्ना यह नहीं कहता कि ये 24 प्राचीन हैं; वह केवल बहुवचन सिंहासनों का उपयोग करता है। और फिर वह कहता है, जिस पर वे बैठे थे जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था।

यह भी दिलचस्प है कि वह हमें यह भी नहीं बताते कि सिंहासन पर कौन बैठा है। इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि जो लोग श्लोक चार के पहले भाग में सिंहासन पर बैठे हैं और अब श्लोक चार के दूसरे भाग में, जहां जॉन कहते हैं, के बीच क्या संबंध है, और मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर काट दिए गए थे उनकी गवाही का. क्या यह एक अलग समूह है? तो क्या आपके पास एक समूह है जो सिंहासनों पर बैठा है, और फिर अब आपके पास एक अलग समूह है, जिनके सिर उनकी गवाही के कारण काटे गए हैं? या मुझे आश्चर्य है कि क्या हमें इसे एक ही समूह के संदर्भ के रूप में लेना चाहिए, फिर से अलग-अलग दृष्टिकोण से।

यूहन्ना सिंहासनों और उन पर बैठे लोगों को देखता है। अब वह और विस्तार से बताने जा रहे हैं कि वे कौन लोग हैं, जो सिंहासनों पर बैठे हैं। मुझे लगता है, इसे देखने का यही एक तरीका है।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि श्लोक चार में सिंहासन पर बैठे लोग देवदूत प्राणी हैं। इसका एक कारण यह है कि इस पाठ की पृष्ठभूमि डैनियल का अध्याय सात प्रतीत होती है। हमने दानियेल अध्याय सात को देखा है, साथ ही प्रकाशितवाक्य में दानियेल की पूरी किताब भी देखी है।

लेकिन डैनियल 7 ने बिंदुओं पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डैनियल अध्याय सात में, यह स्वर्गीय सलाह प्रतीत होती है जो डैनियल अध्याय सात में निर्णय प्रदान करती है। इसलिए कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि पद चार के पहले भाग में सिंहासन पर जो लोग हैं, वे स्वर्गीय वकील होंगे, शायद देवदूत प्राणी होंगे।

अब वे ही निर्णय देते हैं। और फिर उन लोगों की आत्माएं जिनके सिर काटे गए थे, वे संत होंगे, जिन्होंने कष्ट सहा है और जो जानवर के हाथों मर गए हैं। हालाँकि, मुझे आश्चर्य है कि, सबसे पहले, जब आप अध्याय तीन, श्लोक 21, अध्याय तीन और श्लोक 21 जैसे ग्रंथों को देखते हैं, जहां विजेता के लिए किए गए वादों में से एक उसके लिए है जो विजयी होता है, तो मैं उसे अधिकार दूंगा मेरे साथ मेरे सिंहासन पर बैठो।

और मुझे उस विलक्षणता का एहसास वहां हुआ, जैसे ही मैंने विजय प्राप्त की और अपने पिता के साथ उनके सिंहासन पर बैठा। तो, क्या यह संभव है कि हम इन सिंहासनों को विजेताओं के लिए अंतिम पूर्ति के रूप में देखें? ये वे विजेता हैं जो अब सिंहासन पर काबिज हैं।

इसके अलावा, जो भी मामला हो, जो लोग अपनी गवाही के कारण अध्याय चार के दूसरे भाग में सिर काटे गए लोगों की आत्माएं हैं, वे बाकी चार में से वही हैं जो शासन करते हैं। वे जीवन में आते हैं, और शासन करते हैं, सिंहासन वास्तव में इसी के लिए हैं। इसलिए, मुझे आश्चर्य है कि इसे दोबारा देखने का सबसे अच्छा तरीका श्लोक चार के दोनों हिस्सों को एक ही समूह को चित्रित करने के अलग-अलग तरीकों के रूप में देखना है।

इस प्रकार यूहन्ना सिंहासनों और उन पर बैठे हुए लोगों को देखता है। और फिर, दूसरे, वह उन्हीं प्राणियों को देखता है, लेकिन अब वह उनका वर्णन उन लोगों की आत्माओं के रूप में करता है जिनका उनकी गवाही के लिए सिर काट दिया गया था, जो जानवर या उसकी छवि की पूजा नहीं करते हैं। और अब वे जीवित हो गए, और उन सिंहासनों पर एक हजार वर्ष तक राज्य करते रहे।

तो शायद 4ए और 4बी, दोनों द्वारा प्रस्तुत किए गए दो समूह, मैंने देखा, शायद एक ही समूह का वर्णन करते हैं। अब, श्लोक चार में ध्यान आकर्षित करने वाली एक और बात, अधिकांश अनुवाद श्लोक चार के पहले भाग का अनुवाद करते हैं, मैंने सिंहासन देखे जिन पर वे लोग बैठे थे जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। यह शाब्दिक रूप से, अधिक शाब्दिक रूप से है, और पाठ को यह कहते हुए नहीं छोड़ा जाएगा कि निर्णय उन्हें दिया गया था।

इसे पढ़ने का दूसरा तरीका, और मुझे लगता है कि यह बेहतर है, इसे पढ़ना है: निर्णय उनके लिए दिया गया था, या उनकी ओर से निर्णय दिया गया था। यानी उनके पक्ष में फैसला सुनाया जा रहा

है। तो पाठ में स्पष्ट रूप से बाद की तस्वीर कहती है, और वे शासन करते हैं, लेकिन इसका मुद्दा यह होगा कि निर्णय उनकी ओर से या उनके पक्ष में दिया या दिया जाता है।

यह डैनियल अध्याय सात और विशेष रूप से श्लोक 22 पर वापस जा रहा है, यहाँ संतों को अंततः सही ठहराया गया है। यह संतों का अनुमोदन है। यह शहीदों की पुकार का अंतिम उत्तर है।

अब वे जीवित हो उठे और एक हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। अर्थात् निर्णय उनकी ओर से दिया और सुनाया जाता है। फैसला उनके पक्ष में सुनाया जाता है।

अब, दानियेल अध्याय सात की पूर्ति में, उन्हें पुनर्जीवित करके और एक हजार वर्षों तक मसीह के साथ शासन करके न्यायसंगत ठहराया गया है, जो श्लोक एक से तीन में शैतान के बंधन की सटीक अवधि है। अब, यह महत्वपूर्ण क्यों है? हमने कहा कि अध्याय 20, विशेष रूप से श्लोक 10 के माध्यम से, मुख्य रूप से शैतान के न्याय से संबंधित है। लेकिन इसके बीच, ध्यान दें कि हमने पहले ही अध्याय 12 के साथ कुछ कनेक्शनों पर ध्यान दिया है, और वह यह है कि शैतान की पहचान ठीक उसी तरह से की गई है जैसे वह अध्याय 12 में था।

वह ड्रैगन, प्राचीन साँप है, जो शैतान या शैतान है, अध्याय 12 और श्लोक नौ। श्लोक चार में वेदी पर आत्माओं के वर्णन पर भी ध्यान दें, जो उन आत्माओं के नीचे हैं जिनका सिर काट दिया गया है, जो वास्तव में अध्याय छह और छंद नौ से 11 तक जाता है, वेदी के नीचे की आत्माएं जिनका उनकी गवाही के कारण सिर काट दिया गया था यीशु और परमेश्वर के वचन के कारण। लेकिन अब यह भी ध्यान दें कि यह कहता है कि उन्होंने जानवर या उसकी छवि की पूजा नहीं की थी, और उन्होंने अपने माथे या हाथों पर उसका निशान नहीं पाया था, जो आपको अध्याय 13 पर भी वापस ले जाता है।

तो, मुझे लगता है कि यहां जो हो रहा है, वह अध्याय 20 में शैतान के फैसले के हिस्से के रूप में, अब आपके पास है, उस फैसले के हिस्से के रूप में, अब आपके पास उन संतों का समर्थन है जो शैतान के हाथों पीड़ित थे और जानवर। इस प्रकार, वे सभी संबंध अध्याय 12 और 13 में वापस आ जाते हैं, और पाँचवीं मुहर भी, जो मारे गए थे और जो अब वेदी के नीचे थे। तो, यहाँ संतों का अनुमोदन है।

मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें कि, शैतान के फैसले के हिस्से के रूप में, होने वाले पूर्ण उलटफेर पर ध्यान दें। शैतान ने शासन किया और संतों को मौत के घाट उतार दिया। अब आपके सामने पूर्ण उलटफेर है।

संत जीवन में आते हैं, और अब वे शासन करते हैं, जबकि शैतान को अथाह कुंड में बंद कर दिया गया है, और वह अब अपना भ्रामक कार्य करने में सक्षम नहीं है, और वह अब किसी भी गतिविधि में शामिल होने में सक्षम नहीं है। अब, हर कोई संतों के पूर्ण समर्थन को समझ सकता है। इसलिए, वह उलटफेर महत्वपूर्ण है।

अध्याय 12 और 13 का सटीक उलट, जहां शैतान ने शासन किया, शैतान का साम्राज्य सर्वोच्च था, और वह संतों को मौत के घाट उतारने में सक्षम था। याद रखें, स्त्री के वंश का पीछा करते हुए और उस अधिकार को जो उसने दो जानवरों को दिया था। तो, शैतान ने शासन किया; उसने संतों को मौत के घाट उतार दिया।

अब, पूर्ण उलटफेर में, शैतान को बांध दिया गया है, उसका राज्य छीन लिया गया है, और अब संत शासन करते हैं और वे जीवन में आते हैं ताकि हम पा सकें कि वे सही साबित हुए हैं। एक और सवाल जो उठता है, अधिक विशेष रूप से, ये आत्माएं कौन हैं जिनका सिर काट दिया गया है, और क्या वे वही समूह हैं जो जानवर या छवि की पूजा करते हैं और माथे पर निशान नहीं पाते हैं? कुछ लोगों ने दो अलग-अलग समूहों को देखा है: वे जिनका वास्तव में सिर काट दिया गया था और फिर कोई और जिन्होंने जानवर की पूजा करने से इनकार कर दिया था। तो, ये वे लोग हो सकते हैं जो जीवित थे, इसलिए यह धारणा नहीं है कि हर कोई अपने विश्वास के लिए शहीद हुआ या मारा गया, और जॉन को अब तक केवल एक ही व्यक्ति के बारे में पता है, और वह एंटिपास है, हालांकि वह सोचता है कि अन्य लोग आ रहे हैं।

लेकिन कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि हमारे यहां दो अलग-अलग समूह हैं: वे जो अपने विश्वास के लिए शहीद हुए हैं और दूसरा समूह जो उससे थोड़ा बड़ा है, वे सभी जो जानवर और उसकी छवि की पूजा नहीं करते थे और जिन्होंने अध्याय 13 में निशान को अस्वीकार कर दिया था। हालांकि, मुझे आश्चर्य है कि क्या हम वास्तव में इन दोनों को इतनी आसानी से अलग कर सकते हैं। यानी, जब मैंने प्रकाशितवाक्य पढ़ा, तो मुझे संदेह है कि जॉन ने उन लोगों को समझा होगा जिन्होंने जानवर और उसकी छवि की पूजा करने से इनकार कर दिया था और जिन्होंने निशान प्राप्त करने से इनकार कर दिया था, कम से कम जॉन की दूरदर्शी कथा में, उन लोगों को नुकसान नहीं हुआ होगा अंतिम परिणाम, और वह है शहादत, हमारे 21वीं सदी के तरीके में शहादत का उपयोग करना, जैसा कि हम उपयोग करते हैं, कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने विश्वास के लिए मर जाता है।

इसलिए, मुझे संदेह है कि जॉन ने किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना की होगी जिसने जानवर और उसकी छवि की पूजा करने से इनकार कर दिया था और इस निशान से इनकार कर दिया था कि उस व्यक्ति को उनके अनुरूप होने और समर्पण करने से इनकार करने के कारण मारा या मारा नहीं गया होगा, या शहीद नहीं किया जाएगा। इसलिए, मुझे संदेह है कि हमें यहां दो अलग-अलग समूह देखने चाहिए। इसके बजाय, मुझे लगता है कि शायद यह छवि उन लोगों की है जो जानवर की पूजा करने से इनकार करते हैं और जो अपने माथे पर निशान से इनकार करते हैं, वे वे हैं जो अपनी गवाही और वफादार गवाही के कारण मारे गए और सिर काट दिए गए।

लेकिन शायद, यह समूह केवल परमेश्वर के संपूर्ण लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए है। यह, फिर से, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अनुसार, जॉन का मानना है कि जो कोई भी वफादार गवाह रखता है और जानवर का पालन करने से इनकार करता है, उसका अंतिम परिणाम पीड़ा और मृत्यु होगा। इसलिए, मुझे लगता है कि यह केवल जॉन का तरीका है जिसमें संपूर्ण भगवान के लोगों को चित्रित किया गया है, जरूरी नहीं कि उनमें से प्रत्येक को सुझाव दिया जाए, जैसा कि हम जानते हैं कि ऐसा नहीं है, हर अंतिम व्यक्ति को, लेकिन जॉन के संदर्भ में, ऐतिहासिक संदर्भ

में, और भी उनके दूरदर्शी आख्यान में, एक वफादार गवाह बनाए रखने और जानवर का अनुसरण करने से इनकार करने से किसी के वफादार गवाह के कारण शहादत या मृत्यु हो जाती है।

इसलिए, मुझे लगता है कि श्लोक 4 को लोगों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करने के रूप में समझा जाना चाहिए, जो सिंहासन पर हैं, और फिर उनका, जिनकी गवाही और जानवर का अनुसरण करने से इनकार करने के कारण सिर काट दिया गया है। यह अब इतिहास के अंत में ईश्वर के संपूर्ण लोगों का प्रतिनिधित्व है, जो उनकी पीड़ा के कारण सही साबित हो रहे हैं। तो, जानवर ने तब शासन किया और भगवान के लोगों को मार डाला, और अब, उसके फैसले के हिस्से के रूप में, उसके फैसले के अनुरूप, संतों का भी समर्थन है, शैतान के फैसले के बावजूद और दुनिया के फैसले के बावजूद फैसला दे रहा है, और संत वापस जाते हैं और अध्याय 11 पढ़ते हैं, जहां जानवर ने संतों को मौत के घाट उतार दिया और पूरी दुनिया खुश हुई क्योंकि यह एक जीत थी, और संत की गवाही व्यर्थ प्रतीत हुई, संत की गवाही व्यर्थ प्रतीत हुई, अब वे प्रमाणित हैं।

शैतान को बंद कर दिया गया है और बंद कर दिया गया है, इसलिए अब संतों को दोषी ठहराया जा सकता है और दिखाया जा सकता है कि उनकी गवाही और उनकी पीड़ा व्यर्थ नहीं थी क्योंकि, जैसा कि हमने कहा है, अध्याय 12 और 13 में जो हुआ, उसके बिल्कुल उलट, जहां शैतान शासन किया और शैतान ने जानवरों के माध्यम से मार डाला, शैतान ने उन लोगों को मार डाला जिन्होंने उसका विरोध किया, भगवान के लोग जो अपनी वफादार गवाही बनाए रखते हैं, अब एक सटीक उलट में, संत जीवन में आते हैं, वे जीवन प्राप्त करते हैं, और अब वे शासन करते हैं। एक हजार साल की अवधि ने संभवतः रहस्योद्घाटन की पुस्तक में किसी भी अन्य मुद्दे की तुलना में अधिक अटकलें और अधिक भ्रम और अधिक बहस और चर्चा को जन्म दिया है, और मैं आपको दिखाने जा रहा हूँ कि मुझे क्यों लगता है कि यह बल्कि विडंबनापूर्ण है कि यह मामला है। लेकिन प्रकाशितवाक्य के अध्याय 20 में, छंद 4 से 6 तक, शेष पुस्तक के संबंध में इस खंड में इन दो छंदों की संक्षिप्तता के अनुपात में, यह खंड लगभग उभरा है।

ये तीन श्लोक लगभग पूरी किताब का केंद्रबिंदु बनकर उभरे हैं। और मैं इस हजार साल के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ, लेकिन एक हजार साल की अवधि, संतों के जीवन में आने और शासन करने का यह संदर्भ, विशेष रूप से श्लोक 4 के दूसरे भाग में, श्लोक 4 के अंतिम भाग में, यही है केवल यहीं आपको संतों के पुनर्जीवित होने और एक हजार वर्षों तक शासन करने का संदर्भ मिलता है। यह मूल रूप से सहस्राब्दी का एकमात्र संदर्भ है।

लेकिन यह पाठ स्वयं संपूर्ण धर्मशास्त्र प्रणालियों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है या बना है। यह युगांतशास्त्र या अंत समय की घटनाओं के संपूर्ण विचारों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है। इसने विभिन्न समूहों में हमारे चर्चों के इकबालिया बयानों और हमारे चर्चों के सैद्धांतिक बयानों में एक भूमिका निभाई है।

इसने रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने के लिए धार्मिक दृष्टिकोण और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अक्सर, लोग कहते होंगे कि क्या

आप रहस्योद्घाटन की व्याख्या सहस्राब्दी पूर्व या गैर-सहस्राब्दी परिप्रेक्ष्य या उत्तर-सहस्राब्दी परिप्रेक्ष्य से करते हैं? हम बस एक क्षण में उन दृश्यों को देखेंगे। लेकिन मुद्दा यह है कि, ये छंद अपने आप में, ये तीन छोटे छंद, रहस्योद्घाटन के केंद्रबिंदु के रूप में उभरे हैं और न केवल हम अंत समय को कैसे समझते हैं, इसकी संपूर्ण धार्मिक और युगांतिक प्रणाली बनाने के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि विभिन्न दृष्टिकोणों को लेबल करने के लिए भी जिम्मेदार हैं। कैसे हमने प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब केवल इन छंदों के आधार पर पढ़ी।

अब, मैं एक क्षण के लिए जिस चीज़ पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ वह है हज़ार वर्षों का यह उल्लेख। हज़ार वर्षों का यह उल्लेख पूरे चर्च के इतिहास में युगांतशास्त्रीय प्रणालियों, यानी अंत समय को देखने के तरीकों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है और इसके परिणामस्वरूप हुआ है। सहस्राब्दी, या एक हज़ार वर्षों के इस संदर्भ ने, पूरे चर्च के इतिहास में और अंत समय के बारे में हमारी धार्मिक सोच में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

तीन सामान्य दृष्टिकोण सामने आए हैं, और उम्मीद है, मुझे इस पर बहुत अधिक समय खर्च करने की आवश्यकता नहीं है, आप इन दृष्टिकोणों से परिचित हैं, और आप निश्चित रूप से उनके बारे में कई पाठ्यपुस्तकों में पढ़ सकते हैं जो आपको इन विभिन्न प्रणालियों और तरीकों से परिचित कराते हैं। सहस्राब्दी को देख रहे हैं और अंत समय को देख रहे हैं। लेकिन चर्च में रहस्योद्घाटन की व्याख्या के इतिहास में और युगांतशास्त्र या अंत समय के बारे में चर्च की अपनी मान्यताओं की अभिव्यक्ति के दौरान तीन अलग-अलग विचारों को प्रीमिलेनियल, पोस्टमिलेनियल या एमिलेनियल का लेबल दिया गया है। और ये सभी इस पाठ से आते हैं।

फिर, बाइबिल में यह एकमात्र स्थान है जहां आपको स्पष्ट रूप से एक सहस्राब्दी शासनकाल या एक हज़ार साल के शासनकाल का संदर्भ मिलता है। ऐसा आपको और कहीं नहीं मिलता। इसका मतलब यह नहीं है कि बाइबल कहीं और इसका उल्लेख नहीं करती है।

कई लोगों ने पुराने नियम की कुछ अपेक्षाओं में एक सांसारिक शासन, एक सांसारिक राज्य, जैसे डैनियल अध्याय 7 और अन्यत्र और यशायाह और ईजेकील और यिर्मयाह के खंडों में इसके अग्रदूत पाए हैं। कुछ को पुराने नियम में पहले से ही संदर्भ मिल गए हैं। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 15 में कुछ लोगों ने पौलुस की कुछ चर्चाओं में ईसा मसीह के तब तक शासन करने का उल्लेख पाया है जब तक वह अपने शत्रुओं को अपने वश में नहीं कर लेता।

फिर बाप को राज्य सौंप देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रगति हो रही है और कुछ लोगों ने पॉल को नवजात शब्दों में देखा है जो जॉन अब सहस्राब्दी में अधिक विस्तार से संदर्भित करता है। लेकिन मुद्दा यह है कि, बाइबल में यही एकमात्र स्थान है जहाँ हमें सहस्राब्दी का स्पष्ट संदर्भ मिलता है।

फिर, इसका मतलब यह नहीं है कि यह कहीं और नहीं है या यह बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि यह एकमात्र जगह है। लेकिन शुरुआत में यह बताना ज़रूरी है कि हमें सहस्राब्दी साम्राज्य की धारणा यहीं मिलती है। अब, बहुत संक्षेप में, सहस्राब्दी के तीन प्राथमिक दृष्टिकोण,

और वैसे, इन दृष्टिकोणों के भीतर संभवतः उपवर्गीकरण हैं, मैं उन पर बहुत अधिक विस्तार में नहीं जाना चाहता।

अतः, ये समरूप नहीं हैं। यानी, जब हम प्रीमिलेनियमिज्म के बारे में बात करते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई मिलेनियम को बिल्कुल उसी तरह से देखता है। ऐसे उपवर्गीकरण और उपश्रेणियाँ हो सकती हैं जिनमें अलग-अलग विचार आ सकते हैं।

लेकिन सबसे पहले, वह दृष्टिकोण जिसे प्रीमिलेनियलिज्म कहा जाता है। पूर्व सहस्राब्दिवाद दो बातें सुझाता है। नंबर एक यह है कि भविष्य में सहस्राब्दी शासन होगा।

भविष्य की एक ऐसी अवधि है जो अभी तक घटित नहीं हुई है, एक भविष्य की अवधि जहां मसीह प्रकाशितवाक्य 20 की पूर्ति में अपने संतों के साथ पृथ्वी पर शासन करेगा। और दूसरा, और यहीं पर प्री शब्द आता है, उपसर्ग पूर्व, यीशु मसीह, उस घटना से पहले वापस आएगा। इसलिए, हम उस समय की आशा कर रहे हैं जब यीशु मसीह भविष्य में लौटेंगे।

जब वह लौटेगा, तो वह पृथ्वी पर अपना सहस्राब्दी शासन स्थापित करेगा। तो, इसे प्रीमिलेनियलिज्म के रूप में जाना जाता है। प्री-क्राइस्ट सहस्राब्दी से पहले आता है।

वही सहस्राब्दि राज्य की स्थापना करते हैं। राज्य तब तक नहीं आता जब तक मसीह अपने दूसरे आगमन पर नहीं आता। तो, ये सभी विपत्तियाँ और सांड और चीज़ें घटित होती हैं।

और फिर, अंततः, मसीह वापस आता है। वह अध्याय 19 का न्याय करता है, और फिर वह पृथ्वी पर अपना सहस्राब्दी साम्राज्य स्थापित करता है। तो, सहस्राब्दी पूरी तरह से भविष्य में है।

यह अभी तक घटित नहीं हुआ है, और यह तब तक घटित नहीं होगा जब तक मसीह वापस नहीं आ जाता। अब, इसमें विविधताएं हैं। जिसे हमने संदर्भित किया है, वह दृष्टिकोण जो प्रकाशितवाक्य की शाब्दिक व्याख्या करता है, अक्सर प्रकाशितवाक्य अध्याय 20, सहस्राब्दी को उस स्थान के रूप में देखता है जहां इज़राइल के सभी शाब्दिक, भौतिक, राष्ट्रीय वादे पूरे होते हैं।

तो, पुराने नियम में इज़राइल से किए गए सभी वादे, एक डेविड राजा के राष्ट्र पर अपने सिंहासन पर शासन करने, एक पुनर्निर्मित मंदिर, और इज़राइलियों को उनकी भूमि पर बहाल करने के थे। बहुत से लोग ऐसा देखते हैं, अध्याय 20 में मिलेनियम को उस स्थान के रूप में देखते हैं जहां यह घटित होगा। लेकिन हर कोई इस तरह से नहीं सोचता कि यह प्रीमिलेनियल है।

प्रीमिलेनियलिज्म का मुख्य बिंदु इसका भविष्य है, और मसीह इसे स्थापित करने और इसका उद्घाटन करने के लिए सबसे पहले वापस आते हैं। दूसरा दृष्टिकोण वह है जिसे उत्तरसहस्राब्दिवाद के नाम से जाना जाता है। यह दृष्टिकोण पहले वाले दृष्टिकोण जितना सामान्य नहीं है, हालाँकि एक मजबूत अल्पसंख्यक वर्ग अभी भी इस पर कायम है।

मूलतः, उत्तर सहस्राब्दिवाद, पूर्वसहस्राब्दिवाद की तरह, पहला दृष्टिकोण है। उत्तरसहस्राब्दिवाद सोचता है कि सहस्राब्दि अभी भी भविष्य है और यह पृथ्वी पर घटित होगा।

तो, यह इस बात से सहमत है कि भविष्य में एक सहस्राब्दी होगी, एक भविष्य का शासन होगा जो पृथ्वी पर होगा। हालाँकि, जहाँ वे भिन्न हैं, वे सोचते हैं कि पृथ्वी पर भावी सहस्राब्दी एक परिणाम होगा, बहुत ही मूल रूप से, और शायद बहुत सरल रूप से, लेकिन वे कहते हैं कि यह चर्च के मिशन, चर्च के उपदेश और सुसमाचार फैलाने का परिणाम होगा, और आत्मा की शक्ति के माध्यम से, अंततः एक स्वर्ण युग का उद्घाटन होगा जिसे सहस्राब्दी कहा जाएगा।

और फिर सहस्राब्दी के बाद, पृथ्वी पर उस शासनकाल के बाद, उस स्वर्ण युग के बाद, ईसा मसीह वापस आएंगे, इसलिए उत्तर सहस्राब्दीवाद। इसलिए, वे सहमत हैं कि सहस्राब्दी भविष्य में है। पहले दृष्टिकोण की तरह, पूर्वसहस्राब्दीवाद, सहस्राब्दी पृथ्वी पर भविष्य की अवधि है जहाँ, सुसमाचार के प्रचार और आत्मा के कार्य के परिणामस्वरूप, एक स्वर्ण युग होगा जहाँ धार्मिकता सर्वोच्च शासन करेगी, लेकिन तब मसीह उस घटना के बाद अंत में नए आकाश और नई पृथ्वी की स्थापना होती है।

तो, इसलिए पोस्टमिलेनियल। एक तीसरा दृष्टिकोण जिसमें भी थोड़ी भिन्नता है, लेकिन एक दृष्टिकोण जिसे सहस्राब्दीवाद के नाम से जाना जाता है। फिर, यह एक बहुत ही सामान्य दृष्टिकोण है, जो प्रारंभिक चर्च में सदियों से आम रहा है।

आह शब्द, अन्य दो उपसर्गों, टेम्पोरल, प्री और पोस्ट के विपरीत, एक प्रकार का निजी निर्माण है जिसका अर्थ है नहीं या नहीं। तो, वस्तुतः कोई सहस्राब्दी नहीं। एक तरह से, यह एक मिथ्या नाम है क्योंकि वे यह नहीं कह रहे हैं कि कोई सहस्राब्दि है ही नहीं।

वे कह रहे हैं कि भविष्य में कोई भौतिक सांसारिक सहस्राब्दी नहीं है। भविष्य में कोई विशिष्ट समयावधि नहीं है। इसके बजाय, सहस्राब्दीवाद कहता है कि संपूर्ण चर्च युग एक सहस्राब्दी है।

ईसा मसीह के पहले आगमन और ईसा के दूसरे आगमन के बीच की अवधि, पूरी अवधि, हजार वर्षों का प्रतीक एक सहस्राब्दी है। और यह वह समय है जिसके दौरान संत स्वर्ग से मसीह के साथ शासन करते हैं। सभी प्रकार के नए नियम के ग्रंथ हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि मसीह को स्वर्ग में उठाया गया है और स्वर्ग में भगवान के दाहिने हाथ पर बैठाया गया है, जहाँ से वह सारी सृष्टि पर शासन करता है, और हम उसके साथ शासन करते हैं।

कुछ लोगों का सुझाव है कि सहस्राब्दी वह है जो संतों की मृत्यु पर होता है। जब हम मरते हैं और स्वर्ग जाते हैं, तब हम स्वर्ग से मसीह के साथ राज्य करते हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि सहस्राब्दी किसी एक समयावधि तक सीमित नहीं है, इसलिए सहस्राब्दीवाद है।

इसके बजाय, सहस्राब्दी, हजार वर्ष, चर्च युग के संपूर्ण विस्तार, चर्च के इतिहास के संपूर्ण विस्तार का प्रतीक है, जहाँ ईसा मसीह स्वर्ग से शासन करते हैं और संत उनके साथ शासन करते हैं। इससे पहले कि मैं सहस्राब्दी से संबंधित कुछ टिप्पणियाँ करूँ, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पूरे चर्च इतिहास में ईसाई आम तौर पर सहस्राब्दी के विभिन्न विचारों के प्रति सहिष्णु रहे हैं। यह दिलचस्प है जब आप चर्च की शुरुआती शताब्दियों में हमारे कुछ शुरुआती पंथ संबंधी बयानों को देखते हैं; वास्तव में उनमें कोई सहस्राब्दी कथन नहीं है।

लेकिन चर्च सहस्राब्दी के विभिन्न विचारों के प्रति सहिष्णु रहा है, और सदियों से ईश्वरीय, बुद्धिमान ईसाई इन तीनों विचारों को मानते रहे हैं। और कुछ ने तो कई बार अलग-अलग विचारों पर अपना मन भी बदल लिया है। तो मुद्दा यह है कि, चर्च की कभी कोई आधिकारिक स्थिति नहीं रही है, और कभी भी कोई रूढ़िवादी स्थिति नहीं रही है। इन तीनों में से कोई भी दृष्टिकोण चर्च की आधिकारिक स्थिति रूढ़िवादी नहीं रही है।

इसके बजाय, चर्च के इतिहास ने सहस्राब्दी के विभिन्न दृष्टिकोणों को सहन किया है। और मुझे लगता है कि इसे आज सहस्राब्दी को देखने के तरीके में रंग देना चाहिए। मेरा पालन-पोषण ऐसे माहौल में हुआ जहां जब तक आप इनमें से एक भी विचार नहीं रखते, बाइबिल के बारे में आपके पूरे दृष्टिकोण को संदेह में रखा जाता था, बाइबिल के बाकी हिस्सों की व्याख्या करने की आपकी क्षमता पर सवाल उठाया जाता था, और आपकी पूरी आध्यात्मिकता और यीशु मसीह के साथ संबंध पर सवाल उठाया जाता था। संदेह में रखा गया।

मुझे लगता है कि चर्च का इतिहास, साथ ही कुछ टिप्पणियाँ जो मैं इस अध्याय के बारे में करना चाहता हूँ, हमें यह याद दिलाना चाहिए कि अगर कभी यहां, तो हमें पाठ को विनम्रता से देखने की जरूरत है; यदि कभी हो, तो हमें विभिन्न विचारों और विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णु होने की आवश्यकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सहस्राब्दी के बारे में आपका दृष्टिकोण महत्वपूर्ण नहीं है, और यह वास्तव में कोई मायने नहीं रखता है, और यह पाठ कोई मायने नहीं रखता है, और आप इसे गलीचे के नीचे छिपा सकते हैं या अनदेखा करना चाहिए। . नहीं, इस पाठ को पढ़ना महत्वपूर्ण है; यह तय करना महत्वपूर्ण है कि आप इसके बारे में क्या सोचते हैं और आप पाठ को कैसे पढ़ते हैं इसके निहितार्थ को समझें।

लेकिन मेरा मानना है कि आप किस पद पर हैं, उससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आप उसे कैसे संभालते हैं और उसके साथ क्या करते हैं। इसलिए इससे पहले कि मैं यह बताऊँ कि मैं इस पाठ को कैसे देखता हूँ और मैं इसे कैसे देखता हूँ, मैं कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि हम जो भी दृष्टिकोण अपनाते हैं, और जिस तरह से हम इसे पढ़ते हैं, मुझे लगता है कि हमें पाठ की व्याख्या करने के तरीके का मार्गदर्शन करना चाहिए। . सबसे पहले, मैं यह मानता हूँ कि एक हजार वर्षों के संदर्भ को प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए, क्योंकि हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अन्य सभी संख्याओं और अन्य सभी समय अवधियों को देखा है, चाहे वह साढ़े तीन साल हो या 42 महीने या 1260 दिन या जो भी, आधा घंटा, एक घंटा, और संख्या सात, संख्या 12, आदि, आदि।

मेरा मानना है कि हमें एक हजार साल उसी तरह लेने चाहिए जैसे हम अन्य संख्याओं और समय अवधि के अन्य संदर्भों को प्रतीकात्मक रूप में लेते हैं। दूसरे शब्दों में, हजार वर्ष आवश्यक रूप से समय की एक विशिष्ट अवधि को संदर्भित नहीं करते हैं जो लंबे समय तक चलती है। यह हो सकता है।

दूसरे शब्दों में, यह लगभग किसी भी प्रकार की समयावधि को संदर्भित कर सकता है। यह लगभग किसी भी लंबाई और अवधि की समयावधि को संदर्भित कर सकता है। तो हजार की

संख्या संभवतः दर्शाती है, जैसा कि हमने देखा है, संख्या दस आम तौर पर पूर्णता और पूर्णता को इंगित करती है।

तो अब आपके पास 10 गुना 100, एक बड़ी संख्या है। तो फिर, मैं सोचता हूँ कि हजार का मतलब समय की एक अवधि है जो प्रतिनिधित्व करता है या हजार पूर्णता और पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है और वस्तुतः किसी भी अवधि की समय अवधि को संदर्भित कर सकता है, चाहे वह छोटी हो या बहुत लंबी। लेकिन मुझे संदेह है कि जॉन का इरादा इसे 360 दिनों की एक हजार साल की शाब्दिक अवधि के संदर्भ के रूप में लेने का है।

बल्कि इसका महत्व एक हजार का प्रतीकात्मक मूल्य है। यह एक बड़ी गोल संख्या है जो पूर्णता और पूर्णता का संकेत देती है जो वस्तुतः किसी भी अवधि की अवधि को संदर्भित कर सकती है। दूसरा है, लेकिन यह विवादित है, लेकिन मैं सुझाव दूंगा कि, मेरे विचार से, यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो अध्याय 19, श्लोक 11 की हमारी चर्चा पर आधारित है।

मुझे लगता है कि हमें अध्याय 20 पढ़ने की ज़रूरत है, यह हज़ार साल के शासनकाल का संदर्भ है; हालाँकि, हम इसे समझते हैं, हमें इसे मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है, इसके संदर्भ में पढ़ने की आवश्यकता है। अर्थात्, अध्याय 19, श्लोक 11 से लेकर अध्याय 20 के अंत तक, और अध्याय 21 के श्लोक 8 में छवियों या दृश्यों की एक श्रृंखला शामिल है जो ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है, इसका उल्लेख करते हैं। इसलिए, अध्याय 19, श्लोक 11 में, मुझे लगता है, आकाश खुला होने के साथ, हम एक नया दृश्य पेश करते हैं, और इसलिए, मुझे लगता है कि अध्याय 20, अध्याय 20 की संपूर्णता, और हजार साल के शासन का यह संदर्भ होना चाहिए छवियों की इस व्यापक श्रृंखला के संदर्भ में देखा गया जो मसीह के दूसरे आगमन के अर्थ और महत्व की व्याख्या करने के विभिन्न दृश्य या विभिन्न तरीके हैं।

इसलिए हम इन हज़ार वर्षों में जो कुछ भी बनाते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि यह इसके साथ जुड़ा हुआ है, और यह ईसा मसीह के आगमन पर होता है, अध्याय 11 से शुरू होता है। अब, बड़े मुद्दों में से एक यह है: हम अध्यायों को कैसे जोड़ते हैं 19 और 20? प्रकाशितवाक्य 19 अंतिम न्याय दृश्य है, श्लोक 11 से 21 में सवार और सफेद घोड़ा। हम कालानुक्रमिक रूप से इसे अध्याय 20 से कैसे जोड़ सकते हैं? कुछ में इसकी एक बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता, या एक प्रमुख धारणा, मुझे कहना चाहिए, कुछ सहस्राब्दी योजनाओं में एक प्रमुख धारणा, यह है कि अध्याय 20 की घटनाएं अध्याय 19 के बाद होनी हैं।

यह वास्तव में सच हो सकता है, लेकिन फिर भी, हमें इसे प्रदर्शित करना होगा। हम इसे आसानी से नहीं मान सकते क्योंकि, जैसा कि मैंने सुझाव दिया है, मुझे नहीं लगता, और हमने इसे प्रकाशितवाक्य में कहीं और देखा है, जॉन हमेशा चीजों को उस तरह से प्रस्तुत नहीं करता है जो उनके कालानुक्रमिक क्रम को इंगित करता है। इसके बजाय, वह हमें वह क्रम बताने में अधिक रुचि रखता है जिसमें उसने चीजों को देखा।

इसलिए कभी-कभी जॉन एक ही घटना या एक ही समय अवधि का उल्लेख कर सकता है लेकिन इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देख सकता है। इसलिए, अध्याय 19 और 20 एक-दूसरे का अनुसरण

कर सकते हैं और कालानुक्रमिक रूप से संबंधित हो सकते हैं, लेकिन यह संभव है कि अध्याय 20, अध्याय 19 के समान घटना को देखने का एक और तरीका हो सकता है, लेकिन एक अलग दृष्टिकोण से। लेकिन किसी भी मामले में, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं इस धारणा के साथ आगे बढ़ रहा हूँ कि मुझे लगता है कि मैंने पाठ में पाया है कि अध्याय 19, श्लोक 11 से शुरू होकर, अध्याय 21 और श्लोक 8 तक सब कुछ संदर्भित करता है कि दूसरे में क्या होता है यीशु मसीह का आगमन।

तीसरी बात जिसका मैं वास्तव में पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ, बिंदु दो से संबंधित है, और मैं पहले ही उस पर विचार कर चुका हूँ, लेकिन वह यह है कि अध्याय 19 और 20 को आवश्यक रूप से घटनाओं के कालानुक्रमिक अनुक्रम की श्रृंखला के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। इसलिए जरूरी नहीं कि सवार और सफेद घोड़े का न्याय करने के लिए पहले आना, और फिर शैतान को बांधना, और फिर उसके बांधने के बाद, फिर सहस्राब्दी शासन करना, और फिर सहस्राब्दी शासन के बाद, अंतिम लड़ाई में शैतान को रिहा करना, और फिर उसके बाद होता है, महान श्वेत सिंहासन का न्याय। यह संभव है, लेकिन हम यह नहीं मान सकते कि जॉन सटीक कालानुक्रमिक क्रम प्रस्तुत कर रहा है जिसमें ये घटनाएँ घटित हो सकती हैं।

मैंने पहले ही कहा है कि यह संभव है कि वह देख रहा है, और मैं तर्क दूंगा कि यह अधिक संभावना है कि जब ईसा मसीह वापस लौटते हैं तो क्या होता है, इसके अर्थ और महत्व की खोज कर रहा है, लगभग समान घटनाओं या समान समय अवधि का वर्णन करने के लिए विभिन्न छवियों और दृश्यों का उपयोग कर रहा है, क्या ऐसा तब होता है जब मसीह वापस आता है। आखिरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ, आखिरी अवलोकन जो मैं कहना चाहता हूँ, वह यह है कि, जैसा कि हमने पहले ही नोट किया है, यह नए नियम में एकमात्र स्थान है जहां आपको हजार साल के शासनकाल का संदर्भ मिलता है। मैं इसके बारे में बहुत कुछ नहीं कहना चाहता क्योंकि, उदाहरण के लिए, हमें पुराने नए नियम में टिनिति शब्द का इस्तेमाल नहीं मिलता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह महत्वपूर्ण नहीं है, और यह महत्वपूर्ण नहीं रहा है चर्च के लिए।

इसलिए, मैं यह नहीं कहना चाहता क्योंकि हमें एक हजार साल के शासनकाल या सहस्राब्दी शासनकाल का स्पष्ट शब्द नहीं मिलता है, मिलेनियम एक ग्रीक शब्द नहीं है। मिलेनियम एक हजार साल का लैटिन शब्द है, और हम इसे अंग्रेजी में ले आए हैं, लेकिन क्योंकि हमें प्रकाशितवाक्य में कहीं और एक हजार साल के सांसारिक शासन का संदर्भ नहीं मिलता है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन यह दिलचस्प है कि जब मैंने प्रकाशितवाक्य 20 और छंद 4 और 6 का पाठ पढ़ा, तो सहस्राब्दी का संदर्भ काफी रहस्यमय था। दूसरे शब्दों में, यह वास्तव में हमें यह नहीं बताता कि क्या होता है सिवाय इसके कि संत जीवन में आते हैं और शासन करते हैं।

यह बस इतना ही कहता है। यह हमें नहीं बताता कि वे किस पर शासन करते हैं, और शायद बात यह नहीं है। शायद मुद्दा, फिर से, बस इतना ही है कि वे शासन करने वाले जानवर और शैतान के विपरीत शासन करते हैं।

यह स्पष्ट रूप से यह भी नहीं बताता कि जब वे शासन करते हैं तो वे कहाँ होते हैं। यह नहीं बताता कि वे स्वर्ग से शासन करते हैं या पृथ्वी से। मेरा मतलब है, पाठ को देखो।

यह बस नहीं कहता। अब, यह धारणा प्रतीत होती है कि रहस्योद्घाटन पर जोर देने के प्रकाश में कि दुनिया का राज्य हमारे भगवान और उद्धारकर्ता का राज्य बनना चाहिए, यह धारणा प्रतीत होती है, और तथ्य यह है कि शैतान ने पृथ्वी पर संतों पर शासन किया, ऐसा प्रतीत होता है कि, मेरे विचार से, यह धारणा शायद वैध है, कि क्या यह शासन पृथ्वी पर होता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि जॉन यह स्पष्ट रूप से नहीं कहते हैं।

इसके अलावा, अध्याय 1 और 5 में, हमें उन संतों का संदर्भ मिलता है जो हमेशा-हमेशा के लिए शासन कर रहे हैं, जो अब पूरा होता दिख रहा है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि यह इस बारे में बहुत कम बताता है कि संत कहाँ हैं, वे किस पर शासन करते हैं। यह हमें इस हज़ार साल की अवधि के दौरान होने वाली किसी भी अन्य चीज़ के बारे में नहीं बताता है।

क्या यह वह समय है जब इज़राइल के वादे पूरे होते हैं, या यह वह समय है जब एक लंबा शासन होता है जहां मसीह आते हैं और राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था को व्यवस्थित करते हैं? पाठ हमें यह नहीं बताता। मुझे यह दिलचस्प लगता है कि हमारे पास मौजूद इनमें से कुछ प्रश्न काफी गूढ़ और अस्पष्ट हैं। इसके बजाय, मुझे लगता है कि जब आप पाठ पढ़ते हैं, तो इसका एक कारण यह है कि यह इतना संक्षिप्त है क्योंकि यह केवल एक प्रस्तावना है।

ठीक है, सबसे पहले, क्योंकि मुझे लगता है कि मुख्य बिंदु यह है कि अध्याय 20 शैतान के न्याय के बारे में है, मुख्य रूप से सहस्राब्दी साम्राज्य के बारे में नहीं। लेकिन दूसरा, मुझे लगता है कि इसके इतने छोटे होने का कारण जीवन में आना और यहां राज करना प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की प्रस्तावना है। जब आप 21 और 22 पढ़ते हैं, तो यहीं पर सारी आतिशबाजी शुरू हो जाती है।

यहीं पर संतों के प्रतिफल, संतों की पुष्टि, संतों के शासन का पूर्ण प्रकटीकरण, अध्याय 22, श्लोक 5, संतों के हमेशा-हमेशा के लिए शासन करने के साथ समाप्त होता है। मुझे लगता है कि अध्याय 20 बस एक प्रत्याशा और उसके लिए एक तैयारी है। तो अध्याय 21 और 22, यहीं पर सारी आतिशबाजी होती है।

ऐसा लगता है मानो यही चरमोत्कर्ष है। हम इसी का इंतज़ार कर रहे थे, अध्याय 20, सहस्राब्दी का नहीं। यह 21 और 22 है।

और दिलचस्प बात यह भी है कि उन लोगों के जवाब में जो कहेंगे, ठीक है, सहस्राब्दी आवश्यक है क्योंकि यहीं पर पुराने नियम के सभी भौतिक वादे पूरे होते हैं। समस्या यह है कि सभी पाठ, पुराने नियम के सभी पाठ जो पुराने नियम में वादों का उल्लेख करते हैं, अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पाए जाते हैं, जैसा कि हम देखेंगे। तो, पुस्तक का मुख्य लक्ष्य प्रकाशितवाक्य 20 नहीं है; यह 21 और 22 है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि हमारी व्याख्या को प्रकाशितवाक्य के स्वयं के जोर को प्रतिबिंबित करना चाहिए। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की हमारी व्याख्या और अध्याय 20 की हमारी व्याख्या प्रकाशितवाक्य के स्वयं के जोर को प्रतिबिंबित करना चाहिए कि अध्याय 20, मिलेनियम, वास्तव में हमें बहुत कम बताता है। मैं सुझाव देने जा रहा हूँ कि यह क्यों और कैसे हमारे इसकी व्याख्या करने के तरीके को प्रभावित करता है, लेकिन हमारा ध्यान उस पर नहीं होना चाहिए। लेकिन हमारा ध्यान अध्याय 21 और 22 पर होना चाहिए क्योंकि यही वह जगह है जहां इतिहास के लिए भगवान के इरादे का चरमोत्कर्ष, अपने लोगों के लिए भगवान की पुष्टि और पुरस्कार का चरमोत्कर्ष, भगवान के छुटकारे वाले इतिहास का चरमोत्कर्ष अंततः पहुंचता है, अध्याय 20 में नहीं, बल्कि 21 और 22.

और इसलिए, प्रकाशितवाक्य 20 में सहस्राब्दी के बारे में हमारी समझ और हमारी व्याख्या को प्रतिबिंबित करना चाहिए। तो अगले भाग में, मैं इनमें से कुछ टिप्पणियों के आधार पर यह सुझाव देना चाहता हूँ कि मैं अध्याय 20 को कैसे पढ़ता हूँ और मुझे लगता है कि यह इसके अर्थ के संबंध में क्या कर रहा है और यह अध्याय के संदर्भ में कैसे कार्य करता है 20, लेकिन समग्र रूप से पुस्तक के संदर्भ में भी।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन 20, शैतान का बंधन और सहस्राब्दी का परिचय पर सत्र 26 है।